18

बुरे वक़्त में कैसे कायम रहें

(1 शमूएल 18-23)

गुफ़ा ठण्डी और नमी भरी थी। पानी की बूंदें छत पर जमा होकर नीचे ठण्डे फर्श पर टपक रही थीं। कांपते हुए दाऊद ने कपड़ा कंधों पर कस लिया था। भूख से उसके पेट में चूहे दौड़ रहे थे। परन्तु ज्यादा ठण्ड उसके पेट में नहीं बल्कि मन में लग रही थी; उसकी सबसे बड़ी भूख भोजन की नहीं बल्कि दया तथा दिलचस्पी की थी। दाऊद का एकमात्र अपराध मन लगाकर काम करना और परमेश्वर पर भरोसा रखना था, जबकि शाऊल का प्रेम पागलपन की हद तक उसके प्रति द्वेष में बदल चुका था। अब दाऊद शाऊल के लिए एक शिकार जानवर था और वह भी अकेला।

उस अंधेरी, गीली मांद में, दाऊद गाने लगा। उसकी ऊंची स्पष्ट और मधुर आवाज़ से गुफ़ा का वातावरण गूंज उठा। वह अपनी तनहाई, अपनी प्रार्थनाओं और अपने विश्वास के गीत गा रहा था। अदुल्लाम की गुफ़ा से निकला गीत हमारे लिए भजन संहिता 142 अध्याय के रूप में सुरक्षित रखा गया है। गुफ़ा की वीरानगी और दाऊद के मन की तड़प वर्षों से सुनाई दे रही है:

> मैं यहोवा की दोहाई देता, मैं यहोवा से गिड़गिड़ाता हूं,
> मैं अपने शोक की बातें उस से खोलकर कहता,
> मैं अपना संकट उसके आगे प्रकट करता हूं।
> जब मेरी आत्मा मेरे भीतर से व्याकुल हो रही थी, जब तू मेरी दशा को जानता था!
> जिस रास्ते से मैं जाने वाला था, उसी में उन्होंने मेरे लिए फंदा लगाया।
> मैंने दाहिनी ओर देखा, परन्तु कोई मुझे नहीं देखता है।
> मेरे लिए शरण कहीं नहीं रही, न मुझ को कोई पूछता है (आयतें 1-4)।

सम्भव है कि दाऊद का यह गीत हम में से बहुत से लोगों के जीवनों का अनुभव हो। हो सकता है कि आपके जीवन में ऐसा समय कई बार आया हो जिसमें आपको लगा हो कि किसी को मेरी परवाह नहीं है। यह समय भयभीत कर देने वाला होता है, है न?

हमारा प्रश्न यह है कि ''बुरे वक़्त में कैसे कायम रहें?'' इस पाठ में, हम उस समय का अध्ययन जारी रखेंगे जब दाऊद राजा शाऊल के डर से भाग रहा था। यह देखकर कि दाऊद उस हालत में कैसे कायम रहा, शायद हमें समझ आ जाए कि हम भी कैसे विश्वास

में बने रह सकते हैं। आइए बुरा वज़्त आने पर ''ज़्या करें'' और ''ज़्या न करें'' की दस बातों पर ध्यान देते हैं।

I. बुरा वज़्त आने पर अचज़्भा न करें (18:1-20:42)

पहला ''ज़्या न करें'' है कि ''जब बुरा वज़्त आए तो अचज़्भित न हों।'' मैं इसे विस्तार से बताता हूं: ''जब बुरा वज़्त आए तो अचज़्भित न हों–*तब भी जब आप पूरी लगन से काम कर रहे हों।*'' मैं इसे और विस्तार देता हूं: ''जब बुरा वज़्त आए तो अचज़्भित न हों, तब भी जब आप पूरी लगन से काम कर रहे हों–*और तब भी जब मार्ग के हर कदम में परमेश्वर आपके साथ हो।*''

इस कथन से कई लोगों को अजीब लगेगा। हमें लग सकता है, ''निश्चय ही यदि कोई पूरी लगन से परमेश्वर को प्रसन्न कर रहा है, तो उसके साथ कुछ बुरा नहीं होगा!'' लेकिन मुझे लगता है कि मेरा यह कथन सत्य है। दाऊद के जीवन से यह बात प्रमाणित होती है।

पिछले पाठ में, हमने जल्दी से कुछ घटनाओं पर नज़र डाली थी जिससे हम दाऊद के लिए योनातन की मित्रता की आयतों को समझ पाए थे। आइए फिर से वापस चलकर यह देखें कि परमेश्वर मार्ग के हर कदम और बुरे वज़्त के समय भी दाऊद के साथ कैसे था।

आपको याद होगा कि गोलियत को मारने के बाद दाऊद को शाही घराने का सदस्य बनने का निमन्त्रण मिला था। शाऊल उसका परामर्शदाता था और बहुत बड़ा प्रशंसक भी। राजा की निराशा की घड़ी में दाऊद अभी भी शाऊल के लिए गाता था। वह शाऊल का हथियार ढोने वाला तथा निजी अंगरक्षक था। शाऊल ने विचार किया होगा, ''यदि दाऊद एक दानव को मार सकता है, तो वह किसी का भी मुकाबला कर सकता है!'' दाऊद को शाऊल की सेना में सेनापति बना दिया गया था। वह एक प्रसिद्ध व्यज़्ति बन गया था।

परन्तु स्त्रियों द्वारा दाऊद की प्रशंसा में यह गीत गाने से ''कि शाऊल ने तो हज़ारों को, परन्तु दाऊद ने लाखों को मारा है'' (18:7) शाऊल का क्रोध भड़क उठा। इस गीत में किसी भी प्रकार से शाऊल का अपमान नहीं किया गया था। ''हज़ारों'' और ''लाखों'' ''बहुत बड़ी संज़्या'' का वर्णन करने के लिए कविता की भाषा थी। यहूदी शायरी के समानान्तर दो प्रशंसोज़्तियों का एक ही अर्थ होता था।[1] इस गीत में वास्तव में शाऊल का नाम पहले लेकर उसे सज़्मान ही दिया गया था। यदि शाऊल अधिक परिपज़्व और सुरक्षित होता, तो वह इस बात को समझ जाता। परन्तु वह न तो परिपज़्व था और न सुरक्षित, इसलिए हम पढ़ते हैं:

> तब शाऊल अति क्रोधित हुआ, और यह बात उसको बुरी लगी; और वह कहने लगा, उन्होंने दाऊद के लिए तो लाखों और मेरे लिए हज़ारों ही ठहराया; इसलिए अब राज्य को छोड़ उसको अब ज़्या मिलना बाकी है? तब उस दिन से भविष्य में शाऊल दाऊद की ताक में लगा रहा (18:8, 9)।

सम्राट सनकी हो गया था, जो बिना कारण के डर रहा था (अध्याय 18 में तीन बार, कहा गया है कि शाऊल दाऊद से डरता था [1 शमू. 18:12, 15, 29])। शाऊल ने दाऊद को, जब वह उसके लिए वीणा बजा रहा था दो बार भाले से दीवार के साथ चिपकाने की कोशिश की थी। उसने दाऊद को केवल दिखावे के लिए सेना में तरज़्क़ी दी थी, जबकि वास्तव में उसे उज़्मीद थी कि वह युद्ध में मारा जाएगा (1 शमू. 18:17)।

शाऊल ने उस प्रतिज्ञा के सज़्बन्ध में कि वह गोलियत को मारने वाले व्यज़्ति से अपनी बेटी का ज़्याह कर देगा, कई षड्यन्त्र रचे (1 शमू. 17:25)। पहले उसने दाऊद को अपनी बड़ी बेटी, मेरब देने की पेशकश की थी। जब दाऊद ने शालीनता से कहा कि वह उस प्रस्ताव के योग्य नहीं है, तो शाऊल ने मेरब का ज़्याह किसी और से कर दिया।[2] जब शाऊल को पता चला कि उसकी छोटी बेटी मीकल दाऊद से प्रेम करती है, तो उसने सोचा, ''कि वह उसके लिए फंदा हो, और पलिश्तियों का हाथ उस पर पड़े'' (1 शमूएल 18:21)। ''फंदा'' इब्रानी शज़्द का अनुवाद है जो शिकार को जाल में फंसाने के लिए चारा डालने की तरह है। मीकल ने शाऊल की चूहेदानी में रोटी के टुकड़े का काम करना था।

जब शाऊल ने दाऊद के सामने मीकल से ज़्याह का प्रस्ताव रखा, तो उसका उज़्र था, ''मैं तो निर्धन और तुच्छ मनुष्य हूं'' (18:23)। अन्य शज़्दों में वह कह रहा था कि मैं दुल्हन का खर्च नहीं उठा सकता (देखें उत्पज़ि 34:12; निर्गमन 22:16)। ज़्योंकि दाऊद ने गोलियत को मारा था इसलिए शाऊल को खुद चाहिए था कि वह उसे धनी बना देता और दुल्हन के खर्च करने की चिंता दूर करके उससे अपनी बेटी का ज़्याह कर देता (1 शमूएल 17:25)– परन्तु शाऊल ने अपना वचन नहीं निभाया। अब शाऊल ने कहा, ''पैसे की मेरे पास कोई कमी नहीं है। मुझे तो केवल यही सबूत चाहिए कि तुम ने एक सौ पलिश्तियों को मारा है।''[3] शाऊल को उज़्मीद थी कि इस प्रयास से दाऊद मारा जाएगा। दाऊद की साहसी सोच को यह पेशकश आकर्षक लगी। वह अपने आदमियों के साथ पलिश्तियों पर आक्रमण करके सबूत ले आया, वह भी एक सौ पुरुषों के मारने का नहीं बल्कि दो सौ का। अब शाऊल के पास मीकल का ज़्याह दाऊद से करने के अलावा कोई और चारा नहीं बचा था।

शाऊल का भय दिन प्रतिदिन बढ़ता गया। पहले तो योनातन ही दाऊद के साथ था; अब मीकल भी उसकी ओर हो गई! शाऊल की संदेही आंखों में, दाऊद ने उसके ही बच्चों को उसके विरुद्ध भड़का दिया था। शाऊल इससे अधिक सहन नहीं कर सकता था इसलिए वह ''सदा के लिए दाऊद का बैरी बन गया'' (18:29)। ज़्या आप ऐसे ससुर की कल्पना कर सकते हैं जो आपको मरा हुआ देखना चाहता हो? (आप में से कुछ लोग सिर ज़्यों हिला रहे हैं?)

हमने अपने पिछले पाठ में ध्यान दिया था कि शाऊल ने योनातन और अपने अधिकारियों को दाऊद की हत्या करने का आदेश दिया हुआ था, परन्तु योनातन ने अपने मित्र का पक्ष लिया था, जिससे दाऊद को मारने के शाऊल के प्रयासों को कुछ झटका लगा था। परन्तु कुछ ही देर बाद शाऊल ने दाऊद को न मारने की प्रतिज्ञा भूलकर फिर से दाऊद पर भाला फैंका। पहला शमूएल 19:10 कहता है, ''और दाऊद भागा, और उस रात बच गया।''

''भागना'' और ''बचना'' में अगले दस या इससे अधिक वर्षों तक दाऊद के जीवन का हाल संक्षेप में मिलता है; पवित्र शास्त्र के हमारे इस भाग में आपको ये शब्द बार-बार मिलेंगे।[4] दाऊद पूरी लगन से लगा हुआ था; उसे परमेश्वर की आशीष थी; परन्तु फिर भी उस पर बुरा वक़्त आया।

दाऊद पहले भाग कर अपने घर गया और शाऊल द्वारा अपने ऊपर किए गए हमले के बारे में उसने अपनी पत्नी मीकल को बताया।[5] अपने पिता को दाऊद से अधिक जानने के कारण, मीकल ने अपने पति से जान बचाने के लिए भाग जाने को कहा। यह जानकर कि घर पर नज़र रखी जा रही है,[6] मीकल ने दाऊद को एक खिड़की से नीचे उतार दिया।[7] इसके बाद दाऊद कभी घर या मीकल के प्यार के लिए वापस नहीं आया। बुरा वक़्त और बुरा होता जा रहा था।

मीकल ने दाऊद को भागने का मौका देने के लिए, अपने बिस्तर में एक बड़ी सी मूर्ति[8] रखकर उसके सिर पर बकरी के बाल लगाकर उसे ढंक दिया। शाऊल के आदमियों से उसने कह दिया कि दाऊद बीमार है। उसकी चालाकी का पता चलने तक, दाऊद रामाह में शमूएल के पास जा चुका था जहां यह बूढ़ा नबी रहता था। शमूएल दाऊद को नबायोत में[9] नबियों के नगर में ले गया, जहां दाऊद तज़्बू में मिल सकता था। जब शाऊल को पता चला कि वह वहां है, तो उसने हत्यारों का एक दल वहां भी भेज दिया, परन्तु वहां भी परमेश्वर ने दाऊद की रक्षा की। जब शाऊल के आदमियों ने नबियों पर चढ़ाई की तो परमेश्वर ने उन पर अपना आत्मा भेज दिया और वे भविष्यवाणी करने लगे। शाऊल ने दो और दल भी भेजे, लेकिन उनके साथ भी ऐसा ही हुआ।

हम इस दृश्य में मज़ाक की एक बात देख सकते हैं। इसकी तुलना चमड़े की जैकटें पहने, रामपुरी चाकू और साइकिल की चेनें लेकर प्रचारक की हत्या करने के लिए कलीसिया की आराधना सभा पर हमला बोलने पहुंचे गुंडों से की जा सकती है। फिर, उनके चेहरे हास्यास्पद हो जाते हैं और वे गीत की किताब पकड़कर ऊंची आवाज़ से ''जांवें किस के पास गुनाहगार, यीशु है ज़िंदगी'' गीत गाने लगते हैं।

शाऊल को समझ नहीं आ रही थी कि ज़्या हो गया है, सो वह खुद देखने के लिए आया। परन्तु जब वह भविष्यवक्ताओं के पास आया तो परमेश्वर ने फिर से अपना आत्मा भेजकर शाऊल को नि:सहाय कर दिया। यह अध्याय शाऊल के नंगा लेटकर दिन-रात भविष्यवाणी करने के हास्याजनक दृश्य के साथ समाप्त होता है (19:24)![10] यह स्पष्ट था कि रामाह सुरक्षित नहीं है, और दाऊद को एक बार फिर दौड़कर भागना पड़ा। इसके बाद उसने अपने परामर्श दाता शमूएल को फिर नहीं मिलना था। बुरा वक़्त और बुरा हो गया था।

जैसे हमने पिछले पाठ में देखा था, फिर दाऊद योनातन के पास भाग गया। अपने मित्र के सामने चिल्लाते हुए उसकी आवाज़ की घबराहट की कल्पना करें, ''मैं ने ज़्या किया है? मुझ से ज़्या पाप हुआ?'' (20:1)। जब बुरा वक़्त आए, तो शायद आप भी पुकार उठें, ''मैंने ऐसा ज़्या किया कि मुझ पर ऐसा वक़्त आया है?'' वास्तव में दाऊद ने ऐसा कुछ भी नहीं किया था जिससे शाऊल उससे घृणा करता-परन्तु उस पर बुरा वक़्त अवश्य आया।

जब शाऊल ने योनातन को मारने का प्रयास किया, तो कोई संदेह न रहा। शाऊल ने दाऊद को मारकर ही दम लेना था। दो मित्र बिलखते हुए एक दूसरे से अलग हो गए। बुरा वज़्त और बुरा हो गया।

मैं फिर ज़ोर देता हूं कि (1) दाऊद शारीरिक और आत्मिक दोनों तरह से पूरी लगन से काम कर रहा था, और (2) प्रभु उसके साथ था। फिर भी उस पर बुरा वज़्त आया। यदि यह यहोवा के मन के अनुसार होने वाले आदमी के साथ हो सकता है, तो आपके साथ भी हो सकता है। हो सकता है आप ऐल्डर, डीकन, प्रचारक, या बाइबल ज़्लास में पढ़ाने वाले हों और आपके बच्चे नशे के आदी होकर आपको दुखी कर दें। हो सकता है कि आप अपने वैवाहिक सज़्बन्ध को बनाए रखने के लिए पूरी लगन से कोशिश करके प्रेम करने वाले मसीही पत्नी या पति हों और आपका पति या पत्नी आपको छोड़ दे। हो सकता है कि आप अपने कारोबार को सफल बनाने की कोशिश करने वाले एक ईमानदार मसीही व्यापारी हों और फिर भी आपका सब कुछ छिन जाए। हो सकता है आप तन-मन से परमेश्वर की सेवा करते हुए एक विश्वासी मसीही हों और डॉज़्टर बताए, ''आप केवल तीन माह और जीवित रह सकते हैं।''

मुझे गलत न समझें। विश्वासी मसीही होकर हम अच्छा वैवाहिक जीवन, अच्छा परिवार, अच्छी आर्थिक सुरक्षा और अच्छा स्वास्थ्य पाने के अवसरों में सुधार कर सकते हैं। परन्तु हमें यह समझना आवश्यक है कि परमेश्वर की संतान पर भी बुरा वज़्त आ सकता है। बुरा वज़्त आने पर अचज़्भित न हों।

II. पहले मूर्खतापूर्ण कार्य करने पर अचज़्भा न करें (21:1-22:1)

इस प्रश्न पर कुछ क्षण के लिए विचार करें: दाऊद ज़्यों भागा? उसने तो शेरों और भालुओं तक का सामना करके उन्हें मार डाला था। वह गोलियत से भी लड़ा था। पलिश्तियों के विरुद्ध उसने कई युद्ध जीते थे; वास्तव में वह तो एक सेनानायक था। फिर प्राण बचाने के लिए भागने के बजाय उसने शाऊल का सामना बहादुरी से ज़्यों नहीं किया? मैं सुझाव देता हूं कि अपने जीवन में पहली बार उसे मालूम नहीं था कि ऐसी परिस्थिति का सामना कैसे करना है। अब तक, विरोध का सामना करने का उसका ढंग विरोधी को मारना था। उसने शेरों तथा भालुओं को मारा था। उसने गोलियत को मारा था। लेकिन शाऊल परमेश्वर का अभिषिज़्त राजा था और दाऊद यहोवा के अभिषिज़्त को नहीं मार सकता था (1 शमू. 24:6; आदि)। दाऊद को समझ नहीं आ रहा था कि ज़्या करे जिस कारण वह भाग गया।

यह महत्वपूर्ण है कि एक भगौड़े के रूप में दाऊद बिना किसी योजना या उद्देश्य के निराशा से भागते हुए कुछ गलतियां कर रहा था।

पहले तो वह नोब से दक्षिण की ओर लगभग दो मील तक गया। वहां शीलो के विनाश के बाद तज़्बू फिर से स्थापित किया गया था (1 शमू. 4:2, 3; यिर्म. 7:12); यह याजकों तथा उनके परिवारों का नगर बन गया था। दाऊद के पास न कुछ खाने को था न हथियार

और उसने सोचा होगा कि, ''याजक बांटने के लिए अच्छे होते हैं।'' परन्तु जब वह वहां पहुंचा, तो सबसे पहले उसे महायाजक अहीमेलेक ही मिला जो शाऊल का आदमी था।[11] दाऊद को देखकर अहीमेलेक व्याकुल हो गया। दाऊद पहले भी मन्दिर में आता रहता था, परन्तु तब वह शाही सैनिक दल के साथ आता था या उसके साथ सिपाही होते थे। लेकिन अब वह अकेला आया था। अपने बचाव और सहायता पाने के लिए, दाऊद ने झूठ बोलकर कहा कि वह शाऊल के एक बहुत ही गुप्त मिशन पर आया है। याजक ने उसे उस समय उपलब्ध मेज की पांच रोटियां[12] दे दीं। उसने उसे गोलियत की वह तलवार भी दे दी जो मन्दिर में रखी हुई थी। चालाकी से झूठ बोलकर[13] दाऊद परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष के बजाय शाऊल की तरह लग रहा था!

अहीमेलेक से बात करते हुए दाऊद ने ध्यान दिया कि दोएग वहां मौजूद है।[14] दोएग शाऊल के चरवाहों का मुखिया था। (कुछ क्षण के लिए इस तथ्य को परे रखते हैं)।

जितना जल्दी सम्भव हुआ दाऊद वहां से चला गया। इस बार वह पलिश्तीन के दक्षिण पश्चिम में तीस मील गत नगर की ओर गया। दाऊद को अहसास हुआ कि पलिश्तियों से अधिक उसे शाऊल का भय था। (अफसोस, हमें आम तौर पर अपने ''शत्रुओं'' के बजाय अपने ''भाइयों'' से अधिक भय होता है!) पनाह लेने वह गत में भाग गया जो वास्तव में खतरे से खाली नहीं था! आपको याद है कि गोलियत कहां का रहने वाला था? गत का (1 शमू. 17:23)! दाऊद, जिसने गोलियत को मारा था, जिसने दो सौ पलिश्तियों को मारा था और मीकल के स्वयंवर के लिए उनकी लाशें लाया था, यहीं आया। उसने युद्ध में इतने पलिश्ती मारे थे कि लोग गाते थे, ''दाऊद ने लाखों को मारा है''– और वह पलिश्तीन के केन्द्र में जाने के लिए गोलियत के गृहनगर में दृढ़ता से (कमर पर गोलियत की तलवार बांधे), राजा के पास चला गया![15]

दाऊद ने शायद यही सोचा था कि उसे कोई पहचानेगा नहीं, परन्तु भूरे बालों के कारण वह जल्द ही पहचान लिया गया! राजा अकीश के सेवकों को तो इस्राएलियों में सबसे प्रसिद्ध गीत भी पता था: ''शाऊल ने हज़ारों को, और दाऊद ने लाखों को मारा है''[16]– जिसका अर्थ लाखों पलिश्तियों था। दाऊद तो पलिश्तीन में ''मोस्ट वांटेड'' अर्थात अति अवांछनीय लोगों की सूची में सबसे ऊपर होगा!

उन्होंने दाऊद को पकड़ लिया,[17] वह सहम गया। ''तब उसने उनके साम्हने दूसरी चाल चली, और उसके हाथ में पड़कर बौड़हा, अर्थात पागल बन गया; और फाटक के किवाड़ों पर लकीरें खींचते, और अपनी लार अपनी दाढ़ी पर बहाने लगा'' (21:13)। परमेश्वर का चुना हुआ, इस्राएल का होने वाला राजा एक पागल की तरह व्यवहार कर रहा था!

अकीश क्रोधित हो गया। ''क्या मेरे पास बावलों की कुछ घटी है, कि तुम उसको मेरे साम्हने बावलापन करने के लिए लाए हो? क्या ऐसा जन मेरे भवन में आने पाएगा?'' (21:15)। उन्होंने दाऊद को जाने दिया (बहुत से प्राचीन लोगों का विश्वास था कि पागल लोगों पर देवताओं का हाथ होता है इसलिए उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचाता।[18])

इस घटना को पढ़कर मेरी मिली-जुली भावनाएं हैं। मैं दाऊद की चतुराई की सराहना करता हूं कि उसने उसे वहां से निकालने का श्रेय परमेश्वर को दिया[19] परन्तु यदि दाऊद के विचार पहले ही टेढ़े न होते, तो उसे इस परिस्थिति का सामना न करना पड़ता, जिसमें उसे एक पागल की तरह व्यवहार करना पड़ा। परमेश्वर के अभिषिज्ञ को आंखें घुमाते हुए ... ऊल जलूल बोलते हुए ... गेट पर खरोचते और अंगुलियों से ज़मीन पर लिखते[20] ... दाढ़ी नोचते हुए देखकर मुझे बुरा लगता है।[21]

दाऊद कितना नीचे जा सकता था? दाऊद के लिए जो कुछ भी बचा था वह एक छिद्र ढूंढ़कर उसमें से निकलने के लिए था और उसने बिल्कुल ऐसा ही किया। गत से, दाऊद उस गुफ़ा की ओर भाग गया जहां हमारा पाठ आरज़्भ हुआ था और वह अदुल्लाम की गुफ़ा थी।[22]

अदुल्लाम गत और बैतलहम के बीच यहूदा का एक नगर था।[23] यह इलाका उजाड़, पथरीला और बंजर था। निकट ही एक पहाड़ी थी जो गुफ़ाओं के लिए प्रसिद्ध थी, यहां एक नहीं बल्कि हज़ारों गुफ़ाएं थीं जो सैकड़ों मील तक फैली सुरंगों तक जाती थीं। ये गुफ़ाएं पानी के सांपों तथा अन्य विषैले प्राणियों से भरी रहती थीं। आज टूरिस्ट गाइड पर्यटकों को वहां नहीं ले जाते ज़्योंकि अब ये गुफ़ाएं लुटेरों तथा आतंकवादियों के छिपने की पसंदीदा जगह है। लिन्न एंडर्सन इसे ''संसार की बगल'' कहता है।[24] ''कोई मुझे नहीं देखता है'' (भ.सं. 142:4)। दाऊद के जीवन में यह सबसे बुरा वज़्त था।

पुन: मेरी बात: यदि बुरा वज़्त दाऊद पर आया तो आप पर या मुझ पर भी आ सकता है। कुछ वर्ष पहले मेरे एक मित्र का जो बैंक में काम करता है, मधुमेह (शूगर) का पता चलते ही इलाज चल रहा था। वह चुस्त-दुरुस्त, हंसमुख, स्पोर्ट्समैन है और इलाज से उसे इंजन की तरह धज़्का लगा। कई हज़्ते वह बड़ा निराश रहा। उसकी निराशा का एक उदाहरण देता हूं: टीवी पर फुटबॉल मैच देखते हुए वह रोने लगा कि ''मैं फुटबॉल कभी नहीं खेल पाऊंगा।'' वह पहले कभी फुटबॉल नहीं खेला था, परन्तु इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। उसने अपने आप को एक अपंग व्यज़्ति के रूप में, जिसके खेलने के दिन अब खत्म हो चुके हैं, देखा। प्रभु की सहायता तथा स्नेही परिवार और मित्रों के सहयोग से जल्दी ही वह ठीक हो गया और फिर से उसके पुराने दिन वापस आ गए हैं। अब वह पीछे मुड़कर अपनी प्रतिक्रिया को याद करके हंसता है, परन्तु यह मानता है कि कुछ समय तक उसने मूर्खतापूर्ण काम किया था।

हमें लग सकता है कि यदि एक बार हम पर संकट आ जाए, तो हम उससे दोबारा कभी नहीं उबर पाएंगे, परन्तु हम जानते नहीं हैं। मैं जानता हूं कि मुझे कैसी प्रतिक्रिया व्यज़्त करना *अच्छा* लगेगा, मुझे कैसे *उज़्मीद* है कि मैं प्रतिक्रिया व्यज़्त करूंगा, परन्तु हो सकता है कि यह वैसे बिल्कुल न हो। मैं यह इसलिए कह रहा हूं कि जब पहली बार बुरा वज़्त आए तो हम मूर्खतापूर्वक कार्य करके उसे छोड़ नहीं देंगे। इस बात को समझें कि ऐसा किसी के साथ भी हो सकता है और परमेश्वर की सहायता से हम उस में से निकल सकते हैं। दाऊद निकला; मेरा मित्र निकला; और मैं और आप भी निकल सकते हैं।

III. अपने किए हुए कामों की जिम्मेदारी स्वीकार करें (22:1-23)

स्पष्टतया भजन संहिता 142 तभी लिखा गया था जब दाऊद अदुल्लाम की गुफ़ा में पहली बार पहुंचा था, क्योंकि 1 शमूएल 22 में टिप्पणी मिलती है कि दाऊद वहां अधिक देर तक नहीं रुका।

> और दाऊद वहां से चला, और अदुल्लाम की गुफ़ा में पहुंचकर बच गया; और यह सुनकर उसके भाई, वरन उसके पिता का समस्त घराना वहां उसके पास गया। और जितने संकट में पड़े थे, और जितने ऋणी थे, और जितने उदास थे, वे सब उसके पास इकट्ठे हुए; और वह उनका प्रधान हुआ। और कोई चार सौ पुरुष उसके साथ हो गए (22:1, 2)।

पहले, परमेश्वर ने दाऊद को भावनात्मक समर्थन दिया। उसने दाऊद को उसका परिवार दिया। ''उसके भाई तथा पिता का सारा घराना ... उसके पास गए।'' इसमें कोई संदेह नहीं कि दाऊद के परिवार को भी शाऊल से खतरा था।[25]

इसके बाद परमेश्वर ने दाऊद को व्यावहारिक समर्थन दिया। उसने दाऊद को एक काम करने के लिए दिया। बैठकर अपने आप पर कुढ़ने के बजाय परमेश्वर ने दाऊद को एक ऐसा सैनिक दल तैयार करने की चुनौती दी जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती थी। यूनानी शब्द के अनुवाद ''संकट'' से संकेत मिलता है कि इन लोगों को सताया गया था। ''ऋणी'' से पता चलता है कि वे शाऊल द्वारा लगाए गए कर को नहीं चुका पाए थे; वे भाग गए ताकि कर्ज़ चुकाने के लिए उनके परिवारों को बेचा न जाए। अनुवादित शब्द ''उदास'' संकेत देता है कि इन लोगों के साथ बुरा व्यवहार हुआ था और ये परिवर्तन चाहते थे। दुखी केवल दाऊद ही नहीं था; पूरा देश शाऊल के शासन के बोझ तले दांतों तले तिनके दबा रहा था।

ये लोग युद्ध के लिए प्रशिक्षित नहीं थे। यह असंतुष्ट लोगों का एक समूह था जिनमें से अधिकतर एक दूसरे को शायद जानते भी नहीं थे। (कहानी में बाद में हम, ''उन लोगों में से जो दाऊद के संग गए थे, दुष्ट और ओछे'' लोगों के बारे में पढ़ते हैं [1 शमू. 30:21]। एक जगह तो उन लोगों ने उसे पथराव करके मार ही डालना चाहा था [तु. 1 शमू. 30:6]!) अशिक्षित लोगों के झुंड को सेना जैसा कैसे बनाया गया होगा? मैं नहीं जानता, परन्तु दाऊद परमेश्वर की चुनौती को मानकर जल्दी ही फिर से प्रभु की इच्छा को पूरा करने के कार्य में व्यस्त हो गया। वह अपने राज्य के लिए शक्ति का आधार बना रहा था। वह ऐसे अगुवे तैयार कर रहा था जिन्होंने उसके शासनकाल के दौरान उसके साथ रहना था। जब 2 शमूएल 23 अध्याय हमें दाऊद के ''शूरवीरों'' के बारे में बताता है, तो हम पढ़ते हैं, ''फिर तीसों मुख्य सरदारों में से तीन जन ... दाऊद के पास अदुल्लाम नामक गुफ़ा में आए'' (23:13)। दाऊद के राजा बनने पर उसके ''मन्त्रिमण्डल'' में उन्हीं लोगों को शामिल किया गया था जो जंगल में उसके साथ मिलकर लड़ाई करते समय प्रशिक्षित किए गए थे और परखे गए थे।

जब बुरा वक्त आता है और हम मूर्खतापूर्ण काम करते हैं, तो आगे बढ़ने का सबसे

अच्छा ढंग उन चुनौतियों पर ध्यान लगाना है जो परमेश्वर ने हमारे सामने रखी हैं, दूसरों की सहायता करना और अपने आप को शोकित होने से रोकने में व्यस्त रहना होता है।

आखिर परमेश्वर ने दाऊद को आत्मिक सहयोग दिया। पहला शमूएल 22:5 में लिखा है: ''फिर गाद नाम एक नबी ने दाऊद से कहा, इस गढ़ में मत रह;[26] चल, यहूदा के देश में जा। और दाऊद चलकर हेरेत के वन में गया।'' एक समय गाद दाऊद की सेना में शामिल होकर उसका एक सलाहकार बन गया था। दाऊद के राजा बनने के बाद, गाद उसका ''दर्शी'' (1 इतिहास 21:9) था। बाद में गाद दाऊद के राज्य का इतिहास लिखने वालों में से एक हो गया (1 इतिहास 29:29)।

परन्तु दाऊद के लिए परिस्थितियां सुधरने के बावजूद, वह अपनी मूर्खताओं के परिणामों को देखने लगा। एक दिन जब शाऊल गिबा के बाहर एक वृक्ष के नीचे बैठा था और उसके उच्च अधिकारी उसके इर्द-गिर्द थे, तो राजा अपने ऊपर गिला कर रहा था। वह बिलखते हुए कह रहा था ''तुम में से कोई मेरे लिए शोकित'' नहीं (22:8)। दोएग एदोमी उसके पास खड़ा था। (आपको याद है ? यह वही दोएग है जिसने दाऊद को नोब में मन्दिर में देखा था।) दोएब कहने लगा: ''मैं ने तो यिशै के पुत्र को नोब में अहीतूब के पुत्र अहीमेलेक के पास आते देखा, और उसने उसके लिए यहोवा से पूछा,[27] और उसे भोजन वस्तु दी, और पलिश्ती गोलियत की तलवार भी दी'' (22:9, 10)। परन्तु शाऊल के साथ दोएग ने न तो अहीमेलेक की विमुखता का और न दाऊद की चालबाजी का उल्लेख किया था। शाऊल एक बार फिर उन्मत हो गया। उसने अहीमेलेक और अन्य याजकों को बुलाकर मार डाला। फिर उसने पूरे नोब शहर के पुरुष-स्त्रियां, बच्चे, नवजात यहां तक कि पशु भी मरवा दिए![28]

केवल एक याजक अर्थात अहीमेलेक का पुत्र एज़्यातार बच निकला।[29] एज़्यातार ने दाऊद के पास आकर उसे सब कुछ बता दिया कि ज़्या हुआ। इस दुखांत के लिए दाऊद किसी पर भी आरोप लगा सकता था। वह कह सकता था, ''सारी गलती शाऊल की ही है! यदि वह मेरी हत्या का प्रयास न करता, तो यह सब कभी न होता!'' या, ''यदि शाऊल अधिक प्रतिक्रिया न करता, तो तुज्हारा परिवार बच गया होता!'' पुन: वह अहीमेलेक पर तो दोष लगा ही सकता था: ''यदि तेरे पिता ने ललकारा न होता तो मुझे झूठ न बोलना पड़ता!'' दाऊद यह भी कह सकता था, ''भाग्य की बात है। कहने का भाव यह कि यदि दोएग न होता तो यह न होता, या हो जाता ?'' परन्तु दाऊद ने न तो किसी दूसरे पर आरोप लगाया और न कोई बहाना ही बनाया। दुखी मन से उसने कहा, ''जिस दिन एदोमी दोएग वहां था, उसी दिन मैं ने जान लिया, कि वह निश्चय शाऊल को बताएगा। तेरे पिता के समस्त घराने के मारे जाने का कारण मैं ही हुआ'' (आयत 22)। NIV में कहा गया है, ''तेरे पिता के पूरे परिवार की मृत्यु का ज़िज़्मेदार मैं ही हूं।'' दाऊद ने यह नहीं कहा कि ''शाऊल ज़िज़्मेदार है'' या ''अहीमेलेक ज़िज़्मेदार है'' या ''दोएग ज़िज़्मेदार है,'' बल्कि उसने कहा कि ''*मैं* ज़िज़्मेदार हूं।''

हम में से कोई भी बुरा वज़्त आने पर मूर्खता से कार्य कर सकता है, परन्तु इसका अर्थ

यह नहीं है कि हम अपनी मूर्खताओं के लिए ज़िम्मेदार न हों। कभी-कभी, मैं प्रार्थना करता हूं कि हम प्रभु को अपने जीवनों में फिर से काम करने की अनुमति देंगे और अपनी सोच स्पष्ट बनाएंगे। अंततः इस बात पर पहुंचकर, आइए ईमानदारी से और बड़प्पन से अपने कामों की ज़िम्मेदारी स्वीकार कर लें। अपने कामों के लिए दूसरों पर दोष न लगाएं; हालात पर दोष न लगाएं; अपनी ज़िम्मेदारी को मान लें।

हो सकता है कि जैसे दाऊद एब्यातार के सामने आया था हमारे सामने कोई व्यक्ति आ जाए जिसे हमने हानि पहुंचाई हो तो हम क्या करेंगे (नोट मज़ी 5:23, 24)। हमें यह कहने की आवश्यकता पड़ सकती है, ''क्षमा कर दें, मुझसे गलती हो गई थी। कुछ देर के लिए मैंने थोड़ा मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया; मैं अपने किए पर शर्मिंदा हूं। उम्मीद है कि आप मुझे क्षमा कर देंगे।''[30] अपने कार्यों के लिए अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार किए बिना हम बुरे वक़्त में अपनी एकाग्रता बनाकर रखे बिना कायम नहीं रह सकते।

IV. यदि लोग आपको निराश करते हैं तो अचंभित न हों (23:1-29)

आखिर दाऊद गुफ़ा से बाहर आ गया था, समर्थकों का एक दल उसके साथ था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि उसका बुरा वक़्त खत्म हो चुका था। कुछ ही समय बाद दाऊद को फिर कठोर सबक सीखना था कि बुरा वक़्त आने पर लोग आपको निराश करते हैं, केवल वे लोग ही नहीं जिन्हें आपने कभी हानि नहीं पहुंचाई, बल्कि वे भी जिनकी आपने कभी सहायता की होती है।

अगला अध्याय शुरू होता है: ''और दाऊद को यह समाचार मिला कि पलिश्ती लोग कीला नगर से युद्ध कर रहे हैं'' (23:1)।[31] कीला शत्रु की पंक्तियों के पीछे एक इस्राएली नगर था,[32] जिस कारण यह आक्रमण के लिए अधिक संवेदनशील था। पलिश्तियों से युद्ध करने का काम शाऊल का था (तु. 1 शमूएल 9:16), परन्तु वह अपना समय शत्रु से लड़ने के बजाय दाऊद का पता लगाने में गंवा रहा था। इसलिए लोग सहायता मांगने के लिए दाऊद के पास आए।

''तब दाऊद ने यहोवा से पूछा, कि क्या मैं जाकर पलिश्तियों को मारूं?'' (23:2)। दाऊद के साथ छह सौ के करीब आदमी हो चुके थे (1 शमूएल 23:13), परन्तु जहां तक इतिहास बताता है, उन्होंने कभी युद्ध नहीं लड़ा था। कीला शत्रु के पीछे था इसलिए उन्हें घेरा डालकर आसानी से खत्म किया जा सकता था। इसलिए ''दाऊद ने यहोवा से पूछा'' कि क्या वे युद्ध में जाएं।

आइए ''यहोवा से पूछा'' वाक्यांश पर ज़ोर देने के लिए एक पल के लिए रुकते हैं। याद रखें कि शाऊल द्वारा दूसरे सब याजकों को मार डालने के बाद रक्षा के लिए एब्यातार भागकर दाऊद के पास गया था। एब्यातार महायाजक का बेटा था और सभी दूसरे याजक मारे जा चुके थे, इसलिए अब महायाजक एब्यातार ही जीवित बचा था। दाऊद याजकाई का रक्षक भी बना, जो उसके राजा बनने का एक और महत्वपूर्ण कदम था।

इसके अलावा, जब एज़्यातार दाऊद के पास आया, तो वह एपोद लेकर आया था (23:6, 8)।[33] एपोद आस्तीन रहित एक चोगा होता था जो याजकाई के वस्त्रों के ऊपर पहना जाता था। सब याजक एपोद पहनते थे (1 शमूएल 22:18), परन्तु एक एपोद था जो विशेष था ज़्योंकि इसे महायाजक ही पहनता था। यह ऊरीम और तुज़्मीम के साथ होता था, जिसे महायाजक के कवच में (या निकट या नीचे) रखा जाता था (निर्गमन 28:30)। ऊरीम और तुज़्मीम का इस्तेमाल परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए किया जाता था। यह स्पष्ट नहीं बताया गया कि ऊरीम और तुज़्मीम ज़्या थे, न ही यह कि वे कैसे थे। शायद वे निर्गमन 28 में वर्णित पत्थरों में से ही थे। शायद एपोद की जेब में रखे अलग रंग के पत्थर थे। उनका इस्तेमाल सिज़्का उछालने जैसे काम में अधिक किया जाता होगा[34] (बाईचांस नहीं, प्रभु द्वारा ठहराए गए परिणाम के अलावा)। उनका इस्तेमाल स्पष्टतया कुछ प्रश्नों के ''हां'' या ''नहीं'' में उज़र देने के लिए किया जाता था।

परमेश्वर ने दाऊद को अतिरिज़्त आत्मिक सहयोग दिया था: अब दाऊद के पास महा याजक तथा ऊरीम और तुज़्मीम के साथ एपोद भी था! इसलिए दाऊद ''यहोवा से पूछ'' पाया।

दाऊद के प्रश्न का कि ''ज़्या मैं जाकर इन पलिश्तियों पर आक्रमण करूं?'' परमेश्वर ने ''हां'' में उज़र दिया।[35] ''इसलिए दाऊद अपने जनों को संग लेकर कीला को गया, और पलिश्तियों से लड़कर उनके पशुओं को हांक लाया, और उन्हें बड़ी मार से मारा। यों दाऊद ने कीला के निवासियों को बचाया'' (23:5)। नगर को बचाने के बाद, दाऊद और उसकी सेना ने अपना मुज़्यालय बनाने की योजना के लिए कीला में छावनी बना ली होगी। लोगों से तारीफ़ तथा सुरक्षा की अपेक्षा करने का उन्हें पूरा अधिकार था। परन्तु अधिक देर नहीं हुई थी कि शाऊल को खबर मिली कि वे वहां हैं और उसने उनका पीछा करने के लिए वहां पहुंचने की योजना बनाई। दाऊद ने फिर परमेश्वर से पूछा। उसके प्रश्नों में से एक यह था, कि ''ज़्या कीला के लोग मुझे और मेरे जनों को शाऊल के वश में कर देंगे?'' परमेश्वर का उज़र था, ''हां, वे कर देंगे'' (23:12)।

यह दुखी करने वाली बात थी! दाऊद के द्वारा छुड़ाया गया नगर, कायम था; उनकी उपज और पशु सुरक्षित थे; उनके परिवार सुरक्षित थे फिर भी वे अपने छुड़वाने वाले को पकड़वाने को तैयार थे। शायद उन्होंने शाऊल द्वारा नोब नगर को नष्ट करने की बात सुन ली थी और उन्हें पता चल गया था कि यदि वे दाऊद का पक्ष लेंगे तो वह उन्हें ज़ी नष्ट करने से नहीं रुकेगा, परन्तु दाऊद के लिए यह एक और कड़वी दवाई थी। लेकिन दाऊद ने बदला नहीं लिया। ''तब दाऊद और उसके जन जो कोई छः सौ थे कीला से निकल गए'' (23:13)।

दाऊद और उसके साथी यहूदा में जीप के जंगल में चले गए। जीपी लोग यहूदा के गोत्र से थे (यहोशू 15:55), जिसमें से दाऊद भी था। ये उसके अपने ही लोग थे! निःसंदेह वह यहां सुरक्षित था। परन्तु पुनः दाऊद को उन्हीं लोगों ने धोखा दिया जिन्हें उसने कभी हानि नहीं पहुंचाई थी, बल्कि उनकी रक्षा ही की होगी।[36] जीपी लोगों ने शाऊल के पास जाकर

उसे बताया कि दाऊद कहां है, और दाऊद को राजा के सामने आत्मसमर्पण करने का प्रस्ताव रखा (1 शमूएल 23:19, 20)। परमेश्वर के हस्तक्षेप से ही दाऊद का बचाव हुआ। कुछ अध्यायों के बाद,[37] जीपियों ने फिर दाऊद को धोखा दिया।

दाऊद को यह पहली बार धोखा नहीं मिला था, और न ही यह अंतिम बार था; धोखा चाहे कितनी बार भी ज़्यों न हो, दु:खी करता है। आप समझ गए होंगे कि मैं ज़्या कहना चाहता हूं। आपका किसी में भरोसा हो। आपने उस पर पूरा भरोसा रखा हो। फिर वह आपका भरोसा तोड़ दे। उसने आपको निराश किया और आप पीड़ा से भर जाते हैं। ऐसे समय हमें सिखाते हैं कि हमारा भरोसा मनुष्यों पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर होना चाहिए। क्रूस के वीर सिपाही पौलुस ने एक बार कहा था, ''मेरे पहिले प्रत्युज़र करने के समय में किसी ने भी मेरा साथ नहीं दिया, बरन सब ने मुझे छोड़ दिया था: ... परन्तु *प्रभु* मेरा सहायक रहा, और मुझे सामर्थ दी ...'' (2 तीमुथियुस 4:16, 17)।

V. उन मित्रों के लिए धन्यवाद करें जो आपको निराश नहीं होने देते (23:15-18)

अध्याय 23 की 15 से 18 आयतें शेष अध्याय के बिल्कुल विपरीत हैं। जब शाऊल एक पागल की तरह दाऊद के प्राणों का प्यासा कर रहा था और कीला के लोग और जीपी दाऊद को धोखा देना चाहते थे, तो योनातन द्वारा दाऊद को ''परमेश्वर में ढाढ़स दिलाने'' का संक्षिप्त विवरण पढ़ने को मिलता है। हर हालात में आपका साथ देने वाले मित्र सड़क पर नहीं मिलते हैं। यदि आपको ऐसा मिल जाए तो उस मित्र के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करें।

VI. विश्वास रखें परमेश्वर आपको कभी निराश नहीं करेगा (23:14, 25, 26)

यदि किसी देश के पूरे संसाधन किसी को नाश करने के लिए लगा दिए जाएं और उसके आस-पास के लोग भी उसे धोखा देने या पकड़वाने के इच्छुक हों, तो वह व्यज़्ति कैसे बच सकता है? 23:14 में हम पढ़ते हैं कि दाऊद कैसे बचा: ''तब दाऊद तो जंगल के गढ़ों में रहने लगा, और पहाड़ी देश के जीप नाम जंगल में रहा। और शाऊल उसे प्रतिदिन ढूंढ़ता रहा, परन्तु परमेश्वर ने उसे उसके हाथ में न पड़ने दिया।'' दाऊद शाऊल के शिकंजे से इसलिए नहीं बचा कि वह बड़ा चतुर और सब संसाधनों से लैस भगौड़ा था, न ही इसलिए कि उसकी रक्षा के लिए उसके पास छह सौ प्रशिक्षित आदमी थी बल्कि इसलिए बचा ज़्योंकि ''परमेश्वर ने उसे उसके [अर्थात शाऊल के] हाथ में न पड़ने दिया''!

दाऊद के जीवन के इस काल के बारे में बताने वाले अध्यायों को पढ़ें, और देखें कि कितनी बार कहा गया या उसका अर्थ मिलता है कि यहोवा दाऊद के साथ था (1 शमूएल 18:12, 14, 28; 23:2, 4; 25:26, 28से, 34, 39; 26:12, 24; 30:6, 23; आदि)। दाऊद जब कहीं और नहीं जा पाता था तो वह प्रभु के पास ही जाता था। दाऊद के बहुत से भजन

उसके जीवन के इस अशांत समय के बारे में हैं। उन भजनों से पहले के परिचय में दी गई टिप्पणियों पर ध्यान दें:

भजन संहिता 59: ''जब शाऊल के भेजे हुए लोगों ने घर का पहरा दिया कि उसको मार डालें।''

भजन संहिता 56: ''जब पलिश्तियों ने उसको गत नगर में पकड़ा था।''

भजन संहिता 34: ''जब वह अबीमेलेक के सामने बौरहा बना, और अबीमेलेक ने उसे निकाल दिया, और वह चला गया।''

भजन संहिता 57: ''जब वह शाऊल से भागकर गुफ़ा में छिप गया था।''

भजन संहिता 142: ''जब वह गुफ़ा में था।''

भजन संहिता 52: ''जब दोएग अदोमी ने शाऊल को बताया कि दाऊद अबीमेलेक के घर गया है।''

भजन संहिता 63: ''जब वह यहूदा के जंगल में था।''

भजन संहिता 54: ''जब जीपियों ने आकर शाऊल से कहा कि दाऊद हमारे बीच में छिपा नहीं रहता?''

कुछ लोग तनाव के समय भी रोज़ का कामकाज जारी रखते हैं जिससे उन्हें वस्तुओं को परिप्रेक्ष्य में रखने में सहायता मिलती है![38] कभी-कभी हम में से अधिकतर लोगों पर निराशा ने काबू पाया होगा, दाऊद ने न केवल अपने भयों को प्रकट किया बल्कि अविस्मरणीय कविता में अपने विश्वास को दिखाया। इस समय को समर्पित पहले भजन में, दाऊद ने अपनी घबराहट को स्वर दिया:

> ज़्योंकि देख, वे मेरी घात में लगे हैं;
> हे यहोवा, मेरा कोई दोष वा पाप नहीं है,
> तौभी बलवन्त लोग मेरे विरुद्ध इकट्ठे होते हैं।
> वे मुझ निर्दोष पर दौड़ दौड़कर लड़ने को तैयार हो जाते हैं
> (भजन संहिता 59:3, 4क)।

परन्तु फिर उसने परमेश्वर में अपना भरोसा जताया: ''हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊंगा, ज़्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा करुणामय परमेश्वर है'' (59:17)!

इस समय को समर्पित अंतिम भजन में, दाऊद ने जीपियों द्वारा उसे धोखा देने से सज्बन्धित परमेश्वर से पुकार की। दाऊद ने कहा:

> हे परमेश्वर अपने नाम के द्वारा मेरा उद्धार कर,
> और अपने पराक्रम से मेरा न्याय कर।
> हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन; मेरे मुंह के वचनों की ओर कान लगा।

ज़्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे हैं,
और बलात्कारी मेरे प्राण के ग्राहक हुए हैं; ... (भजन संहिता 54:1-3)।

ज़्या परमेश्वर ने उस प्रार्थना का उज़र दिया था? 1 शमूएल 23 के अंत में देखें। जीपियों द्वारा दाऊद को शाऊल के सपुर्द करने की पेशकश के बाद, राजा ने उनसे पूछा कि वे दाऊद का ठिकाना बताएं, ताकि कहीं ऐसा न हो कि दाऊद फिर भाग जाए। जीपियों की अगुआई में शाऊल और उसकी सेना उसके छिपने के स्थान पर पहुंच गए। शीघ्र ही शाऊल दाऊद की खोज में लग गया: ''शाऊल तो पहाड़ की एक ओर, और दाऊद अपने जनों समेत पहाड़ की दूसरी ओर जा रहा था; और दाऊद शाऊल से डर के मारे जल्दी जा रहा था, और शाऊल अपने जनों समेत दाऊद और उसके जनों को पकड़ने के लिए घेरा बनाना चाहता था'' (23:26)। शाऊल की हज़ारों सिपाहियों की सेना ने दोनों ओर से पहाड़ को घेर लिया; जिससे दाऊद और उसके छह सौ आदमी घिर गए। ऐसा लगा जैसे अब दाऊद बच नहीं पाएगा। फिर परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। ''एक दूत ने शाऊल के पास आकर कहा, फुर्ती से चला आ; ज़्योंकि पलिश्तियों ने देश पर चढ़ाई की है। यह सुनकर शाऊल दाऊद का पीछा छोड़कर पलिश्तियों का साज़्हना करने को चला;'' (23:27, 28क)।[39] इन शज़्दों को आयत 14 के संदर्भ में पढ़कर यह कहना कि ''यह तो यूं ही हो गया'' असज़्भव है। या, ''दाऊद भाग्यशाली था न?'' हर किसी को समझ थी कि *परमेश्वर* ने उसकी सहायता की थी। बाद में उस जगह पर एक यादगार बनवाई गई थी। ''इस कारण उस स्थान का नाम सेलाहज़्महलकोत पड़ा'' (23:28ख)।

रात चाहे कितनी भी काली ज़्यों न हो, परमेश्वर में विश्वास न छोड़ें। दाऊद जिसने जंगल में इस सच्चाई को परखा, लिखा है, ''परमेश्वर हमारा शरण स्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक'' (भजन संहिता 46:1)। ''अति सहज'' शज़्द को रेखांकित कर लें। परमेश्वर मुश्किल की घड़ी में अति सहज होता है; वह आपकी समस्याओं के समय आपके साथ रहता है। हो सकता है कि अभी आप उसे देख न पा रहे हों, परन्तु परमेश्वर के निकट रहें। अब से पांच ... या दस ... या बीस वर्षों बाद हो सकता है कि आप पीछे मुड़कर परमेश्वर के हाथ को स्पष्ट देख पाएं। प्रभु में बने रहें; वह आपको निराश नहीं करेगा!

VII. कठोर न बनें

बुरे वज़्त में विश्वासी रहने के दाऊद के नमूने से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। यह देखने के लिए कि दाऊद ने बदले का सामना कैसे किया, अगले पाठ में हम अध्याय 24 से 26 का अध्ययन करेंगे। बुरे समय की सबसे खतरनाक बात यह होती है कि इसमें हमारे मन कठोर हो जाते हैं। अपने मनों में ''कठोरता की जड़'' को ''फूट निकलने'' से पहले ही पकड़ लेना आवश्यक है (इब्रानियों 12:15)।

VIII. क्षमा करने वाले बनें

कठोर होने से बचने का ढंग क्षमा करने वाले बनना सीखना है। हमारे अगले पाठ की चुनौती ''जब मन बदला लेने के लिए पुकारता है'' को इन शब्दों में संक्षिप्त किया जा सकता है: ''सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। ...'' (इफिसियों 4:31, 32)।

IX. इस बात को समझें कि यहां कुछ भी स्थायी नहीं है

यह हमें यह भी समझने में सहायता करता है कि समय अच्छा हो या बुरा, सदा के लिए नहीं रहता। अगले भाग में हम दस वर्ष तक भागने के बाद दाऊद के राजा बनने की बात देखेंगे। ध्यान रखें; बुरा वक़्त रुका नहीं रहेगा। हम इन तथा अन्य बातों पर निर्भर रह सकते हैं, परन्तु कुछ देर के लिए बुरे वक़्त में अडिग रहने के एक अंतिम सुझाव से समाप्ति करते हैं।

X. समझ लें कि बुरे वक़्त से भलाई निकल सकती है

रोमियों 8:28 कभी न भूलें; इसे कस कर पकड़े रखें: ''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।'' ध्यान करें कि दाऊद के जीवन के उन कठिन दिनों के दौरान परमेश्वर क्या कर रहा था: परमेश्वर दाऊद को आकार देने अर्थात राजा बनने के लिए तैयार करने का काम कर रहा था। भेड़ों की देखभाल करने का काम उसके लिए तैयारी की डिग्री था। जान बचाने के लिए भागना उसका डिग्री कोर्स था।

हम परमेश्वर की योजनाओं तथा उद्देश्यों को तो नहीं जान सकते (यशायाह 55:8, 9), परन्तु यह सम्भव है कि एक बात जो परमेश्वर कर रहा था वह उन सब बातों को निकालना (अर्थात दाऊद की सारी ''बैसाखियों'' को खींचना) था जिन पर दाऊद आश्रित था, दाऊद को केवल परमेश्वर पर निर्भर रहना सीखना था। हमने दाऊद को अपना घर और मीकल का प्रेम खोने; शमूएल से अंतिम बार मिलने; अपने मित्र योनातन से बिलखते हुए अलग होते; परमेश्वर के मन्दिर से अलग होने के समय देखा था। हमने भजन संहिता 142 में उसकी विलापात्मक पुकार ''न मुझ को कोई पूछता है'' (आयत 4) सुनी थी।

परन्तु भजन संहिता 142 की अगली आयतों को देखें। आयत 5 में दाऊद ने कहा, ''हे यहोवा, मैंने तेरी दुहाई दी है; मैंने कहा, *तू* मेरा शरण स्थान है, मेरे जीते जी तू मेरा भाग है।'' दाऊद से उसकी शक्ति के दूसरे स्रोत छिन गए होंगे, परन्तु उसका परमेश्वर उसके पास था, और उसके सामने वह गिड़गिड़ाया: ''मेरी चिल्लाहट को ध्यान देकर सुन, क्योंकि मेरी बड़ी दुर्दशा हो गई है! जो मेरे पीछे पड़े हैं, उन से मुझे बचा ले; क्योंकि वे मुझ से अधिक सामर्थी हैं। मुझ को बन्दीगृह से निकाल कि मैं तेरे नाम का ध्यान करूं!'' (आयतें 6, 7क)।

दाऊद ने इन दृढ़ शब्दों के साथ इस भजन को समाप्त किया: ''धर्मी लोग मेरे चारों ओर

आएंगे; ज़्योंकि तू मेरा उपकार *करेगा*'' (आयत 7क)। आयत 4 (''न मुझ को कोई पूछता है'') और आयत 7 (''धर्मी लोग मेरे चारों ओर आएंगे'') को केवल दो आयतों से अलग किया गया है, परन्तु भावनात्मक तौर पर उनमें लाखों मील की दूरी है। दाऊद अपने प्रभु में भरोसे के एक नये स्तर पर जा रहा था!

ये सबक हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं ज़्योंकि कभी-कभी हम इतने कठोर हो जाते हैं कि उन्हें सीखने का हमारे पास एकमात्र ढंग अपने जीवनों को आघात पहुंचाना हो सकता है। शायद अनुग्रहकारी और क्षमा करने वाले होना सीखने का एकमात्र ढंग यही है कि पहले कोई हमसे दुर्व्यवहार करे। शायद पूरी तरह से परमेश्वर में भरोसा रखना सीखने का एकमात्र ढंग अपनी हर प्रिय चीज़ को खोना है। जब संसार का कोई व्यक्ति सब कुछ खो देता है, तो वह कहता है, ''लगता है मेरा सब कुछ छिन गया है।'' जब किसी मसीही का सब कुछ छिन जाता है तो वह परमेश्वर की ओर देखता है और परमेश्वर उससे कहता है, ''तेरा हाथ खाली है? अच्छा है! अब तू मेरी सबसे उज़म आशिषें लेने को तैयार है!''

मैं यह नहीं कह रहा कि हमें बुरा वज़्त आने की इच्छा करनी चाहिए और उसकी राह देखनी चाहिए। मैं तो यह कह रहा हूं कि यदि बुरा वज़्त आ जाए तो उसके प्रति हमारे व्यवहार से संसार का हर परिवर्तन लाया जा सकता है। हम अच्छे या बुरे हर समय में से बाहर निकल सकते हैं। आइए बुरा वज़्त आने पर अपने व्यवहार को सकारात्मक बनाएं, ज़्योंकि अच्छा समय उसी से आ *सकता है*।

सारांश

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कौन हैं; बुरा वज़्त किसी पर भी आ सकता है। यादें बह जाती हैं: एक ऐल्डर अपने सोफे पर बैठा अपने परिवार की गंभीर समस्याओं के कारण रो रहा है; पथराई आंखों से माता-पिता मेरे से अपनी अविवाहित बेटी के गर्भवती होने की बात कर रहे हैं; माता-पिता, दादा-दादी, मित्र छोटे से अस्पताल के कमरे में इकट्ठे हो गए हैं, वे स्विमिंग पूल में डूबे बच्चे के हाल के बारे में जानने को बेताब हैं; एक मसीही स्त्री, दुखी मन से मुझे बता रही है कि उसका बेटा समलैंगिक है। सज़्भव है कि आपमें से बहुत से लोग इस समय बुरे वज़्त से गुज़र रहे हों। यदि आप पर इस समय वज़्त बुरा है तो दाऊद के जंगल वाले अनुभव से सबक सीखें कि यदि हम पूरी कोशिश करते हुए प्रभु पर भरोसा रखें तो वह हमें संकट की घड़ी से निकाल देगा। दाऊद निकला था और हम भी निकल सकते हैं।

सरमन नोट्स

इस पाठ में ''ज़्या करें'' और ''ज़्या न करें'' की दस बातें दी गई हैं (चार का उल्लेख केवल संक्षेप में है)। ''बुरे वज़्त में विश्वास में बने रहने के लिए करने और न करने'' की ''टॉप टेन लिस्ट'' पर आप ''उल्टी गिनती'' कर सकते हैं। यदि आप ऐसा करते हैं, तो

अंतिम मद को सूची में ''नज़्बर एक'' पर रखें, अंतिम मद यह तथ्य होगा कि बुरे वज़्त में *परमेश्वर* हमारी सहायता करेगा।

जैसा कि पाठ में ध्यान दिलाया गया है, कई भजन दाऊद के जीवन के इस अशांत समय के बारे में हैं। इनमें से कई भजन अतिरिज़्त प्रवचनों के लिए बहुत अच्छे हैं। (प्रवचनों पर मेरी पहली पुस्तक, *''द डे क्राइस्ट केम अगेन'' एण्ड अदर सरमन्स* में ''नो मैन केयरथ फ़ॉर माई सोल'' [अंग्रेज़ी पुस्तकें जिनका अनुवाद नहीं हुआ] पर भजन संहिता 142 अध्याय लागू होता है। इस संदेश के पहले भाग के कुछ वाज़्यांश उसी से लिए गए थे।)

टिप्पणियां

[1]नोट व्यवस्थाविवरण 32:30; भजन संहिता 91:7; मीका 6:7. जब कोई मां ''मैंने तुझे हज़ार बार कहा है'' और ''मैंने तुझे लाख बार कहा है'' कहती है, तो वह एक ही बात कह रही होती है। [2]सज़्भवत: यह दाऊद को विद्रोह के लिए भड़काने के लिए एक षड्यन्त्र था जिससे शाऊल को उसकी हत्या करने का बहाना मिल जाता, परन्तु वह सफल नहीं हो पाया। [3]शाऊल ने एक सौ खतनारहित पलिश्ती पुरुषों की ''खलड़ियां'' मांगी थीं (1 शमूएल 18:25)। [4]1 शमूएल 19:12, 18; 20:1; 21:10; आदि। अगले कुछ अध्यायों में दस बार, (किसी न किसी रूप में) कहा गया है कि दाऊद भाग गया। [5]मीकल को किसी तरह यह पता चल गया था (1 शमू. 19:11)। [6]घर पर नज़र रखी जा रही *थी* (1 शमूएल 19:11)। [7]इससे यह संकेत मिल सकता है कि राहाब के घर की तरह उनका घर नगर की दीवार पर बना हुआ था (देखें यहोशू 2:15)। [8]इब्रा.: *teraphim*. इसका इस्तेमाल आम तौर पर मूर्ति के लिए होता है, और हिन्दी के अलावा NASB में भी इसका यही अनुवाद हुआ है। दाऊद के घर में मूर्ति ज़्या कर रही थी? ज़्योंकि बाइबल हमें कोई विवरण नहीं देती, इसलिए हम हठधर्मी नहीं बन सकते, परन्तु ज़्या पता मीकल उसे अपने पिता के घर से लाई हो और दाऊद को पता न हो कि वहां कोई मूर्ति है। आवश्यक नहीं कि प्राचीन मूर्तियां मूर्तियों की तरह ही *दिखती* हों; यह कमरे के कोने में सजावट के लिए रखने वाला स्तज़्भ भी हो सकता था। [9]''नबायोत'' का अर्थ है ''निवास स्थान'' या ''घर।'' यहां स्पष्टतया घरों के एक कज़्पलैज़्स की बात है जहां नबी रहते थे। [10]ज़्योंकि ''नंगा'' का अर्थ ''निर्वस्त्र'' या ''ढंग के कपड़े न पहना हुआ'' दोनों हो सकता है, इसलिए हम नहीं जानते कि शाऊल कितना नंगा था। परन्तु बर्टन कॉफ़मैन ने टिप्पणी की है कि दोनों में से किसी भी हालत में होश में आने पर शाऊल की दिलचस्पी दाऊद को ढूंढ़ने से अधिक अपने कपड़े ढूंढ़ने में होगी।

[11]अहीमेलेक एली के वंशजों में से था। वह या तो अहिय्याह का भाई था जो शमूएल के उसे छोड़ देने के बाद उसके आत्मिक सलाहकार के रूप में शाऊल के साथ मिल गया था (तु. 1 शमू. 14:3; 22:9), या वह अहिय्याह ही था (अर्थात, अहीमेलेक का दूसरा नाम अहिय्याह था)। दोनों में से जो भी हो, दाऊद उस पर भरोसा नहीं कर सकता था। [12]प्रत्येक सज़्त के दिन मन्दिर में मेज़ पर बारह बड़ी-बड़ी अखमीरी रोटियां रखी जाती थीं (निर्गमन 25:23-30; लैव्यव्यवस्था 24:5-9)। अगले सज़्त के दिन, मेज़ पर बारह नई रोटियां रखी जानी थीं और याजकों ने पुरानी रोटियां खा लेनी थीं। याजक ने दाऊद को पुरानी रोटियों में से कुछ दीं। यीशु ने इस कहानी का इस्तेमाल यह समझाने के लिए किया कि भला करना और प्राण बचाना हर हालात में उचित है (मज़ी 12:3, 4; लूका 6:9)। आज के लिए इस प्रासंगिकता पर विचार करें: यदि कोई आराधना के लिए जा रहा हो (जिसकी आज्ञा है-इब्रानियों 10:25) और रास्ते में किसी का एज़्सीडेंट हुआ हो, तो ज़्या रुककर घायलों की सहायता करना गलत है, चाहे ऐसा करने से आराधना में न ही जा पाए। परन्तु इसे ''बुराई करने, ताकि भलाई निकले'' के लिए लाइसेंस के रूप में नहीं लेना चाहिए। [13]कृपया समझें कि दाऊद की बेईमानी तथा अन्य मूर्खताओं का बचाव करने की आवश्यकता नहीं है। बाइबल बहुत सी बातों का विवरण ज्यों का त्यों

देती है चाहे वह उनसे सहमत हो या न। परमेश्वर झूठ बोलने की स्वीकृति नहीं देता (1 यूहन्ना 2:21; यूहन्ना 8:44)। [14]बाइबल कहती है कि दोएग ''यहोवा के आगे रुका हुआ था'' (1 शमूएल 21:7)। यह कोई अनुशासनात्मक कार्य हो सकता है जिससे बाद में याजकों के प्रति दोएग की शत्रुता को समझाने में सहायता मिलनी थी। [15]ध्यान दें कि दाऊद ''गत के राजा अकीश के पास गया'' (1 शमूएल 21:10) और स्पष्ट है कि वह ''उसके भवन में आने'' की इच्छा रखता था (नोट 1 शमूएल 21:15)। पहला शमूएल 27:1 इस समय उसके तर्क को समझने में कुछ सहायक हो सकता है। [16]1 शमूएल 21:11. ध्यान दें कि उन्होंने दाऊद को ''देश का राजा'' कहा। सम्भवतया उनके कहने का अर्थ था कि ''जो लोगों के मनों पर राज्य करता है।'' [17]भजन संहिता 56 का आरम्भिक नोट देखें। [18]अमेरिकन वेस्ट में कई यात्री पागल होने का ढोंग करके भारतीयों से बचे। [19]भजन संहिता 34 की आरम्भिक टिप्पणी पढ़ें और फिर भजन संहिता का संदेश। [20]कुछ अनुवादों में है, ''वह फाटक को नोचने लगा।'' दाऊद ने निशान बनाने के लिए अपनी तलवार का भी इस्तेमाल किया होगा।

[21]एज़्पलिफाइड बाइबल देखें। [22]1 शमूएल 22:1. ''अदुल्लाम'' का अर्थ है ''आश्रय।'' [23]मूल अदुल्लाम के वहीं होने पर विद्वान एकमत नहीं हैं। यहां परम्परागत स्थान का वर्णन किया गया है। [24]लिन्न एंडर्सन, ''मैन ऑन द रन,'' (पृ. न., ति.न.), साउंड कैसेट। [25]दाऊद अपने माता और पिता को मोआब में ले गया था ताकि उसके भगौड़ा रहने तक वे सुरक्षित रहें (1 शमूएल 22:3, 4)। परिवार के मोआब से पुराने सम्बन्ध थे; दाऊद की पड़दादी मोआबिन थी। इसके अलावा शाऊल ने मोआब से लड़ाई की थी (1 शमूएल 4:47), जिस कारण मोआब के राजा ने शाऊल के ''शत्रु'' से सहानुभूति दिखाई होगी। [26]''गढ़'' शब्द का इस्तेमाल दाऊद के भागने की कहानी में बार-बार हुआ है। यह किसी एक जगह को नहीं बल्कि किसी भी जगह को कहा गया है जो पहुंच से बाहर या सुरक्षित थी। इस आयत में, यह एक गुफ़ा थी। [27]पहला शमूएल 21:1-9 यह उल्लेख नहीं करता कि दाऊद ने परमेश्वर से पूछा, परन्तु उसने पूछा हो सकता है (देखें 22:15)। [28]1 शमूएल 22:18, 19. ऐसी त्रासदियों की भविष्यवाणी हुई थी (तु. 1 शमूएल 2:31)। [29]शायद वह नोब में ''गोदाम की देखभाल के लिए'' रह गया था और दूसरे लोगों ने शाऊल के निमन्त्रण को स्वीकार किया। [30]वह हमें क्षमा करे या न, हम तो जो कर सकते थे, करेंगे (रोमियों 12:18)।

[31]पलिश्ती लोग ''खलिहान लूट रहे'' थे; स्पष्टतया उनके हमले का उद्देश्य भोजन चुराना था। [32]नोट 1 शमूएल 23:3: कीला में जाने के लिए उन्हें यहूदा से निकलना पड़ा होगा। [33]कुछ लोग यह कहने के लिए कि एज़्यातार मूलत: दाऊद के पास तब तक नहीं आया था जब तक दाऊद कीला में नहीं पहुंचा 1 शमूएल 23:6 का इस्तेमाल करते हैं, परन्तु सम्भवत: आयत 6 का अर्थ है कि जब कीला पर विजय पाने के लिए दाऊद की सेना लड़ रही थी तो एज़्यातार पीछे था और वह दाऊद से तब तक नहीं मिला था जब तक विजय न मिली थी। आयत 2 में दाऊद के ''यहोवा से पूछा'' का अतिस्वाभाविक अर्थ है कि उसने आयत 9 में भी ऐसे ही पूछा था। [34]हो सकता है कि ऊरीम और तुम्मीम बिल्कुल एक जैसे हों केवल उनके रंग में फर्क हो-जिसमें एक पत्थर ''हां'' और दूसरा ''नहीं'' को दर्शाने के लिए हो। हो सकता है प्रश्न दिए जाने के बाद, महायाजक अन्दर जाकर एक पत्थर निकालता हो। यह भी सुझाव दिया गया है कि ऊरीम और तुम्मीम चौरस थे और दोनों के एक ओर एक रंग था और दूसरी ओर अलग रंग। उन्हें हवा में उछाला जाता था। भूमि पर पड़ने के बाद यदि दोनों तरफ एक ही रंग हो, तो उसका अर्थ पक्की ''हां'' था; यदि दोनों ओर दूसरा रंग होता, तो इसका अर्थ पक्की ''ना'' होता था; यदि दोनों रंग दिखाई दें तो परिणाम अनिश्चित होता था। एक यहूदी परम्परा के अनुसार उनके *चमकने* से परमेश्वर की इच्छा का संकेत मिलता था। [35]अपने आदमियों के भय के कारण दाऊद ने उन्हें आश्वस्त करने के लिए दो बार पूछा। दोनों बार परमेश्वर ने जाने के लिए कहा। [36]दाऊद और उसके आदमी उन कृतज्ञ मालिकों से मिली भेंटों के सहारे ही थे जिनकी सम्पत्ति की उन्होंने रक्षा की थी (देखें 1 शमूएल 25:14-16)। [37]जीपियों द्वारा दाऊद से दूसरा धोखा 1 शमूएल 26 में मिलता है। [38]हम नहीं जानते कि दाऊद ने अपने गीत एक ही समय लिखे या वह अपने मन में संकलित करता रहा और उसने बाद में उन्हें लिख लिया हो। [39]क्योंकि शाऊल की दिलचस्पी पलिश्तियों पर हमला करने में पहले नहीं थी (1 शमूएल 23:1 से), इसलिए यह हमला शाऊल की किसी सम्पत्ति पर हुआ होगा।